नागमती वियोग खण्ड (की व्याख्या)

३४१ → नागमती चितउर पँथ हेरा। ....

झुरि झुरि पाँजरि धनि भई बिरह कै लागी अगिन ॥

व्याख्या → नागमती चित्तौड़ में राजा रत्न सेन की बाट देखती थी। प्रियतम जो गए हैं लौट कर नहीं आए हैं। वे किसी नागरी नारी के फेर में पड़ गए हैं। उसने मोहित करके उनका चित्त मेरी ओर से हर लिया है। सुग्गा काल बनकर प्रियतम को ले गया। हाय! प्रिय को न ले जाता चाहे प्राण ले जाता। वह सुग्गा वामन रूप में नारायण बनकर आया और राज करते हुए राजा बलि को छल ले गया। उसने छल करके कर्ण की परीक्षा (बान) ली, जिससे अर्जुन को को उसके कवच से आनंद हुआ। भोगी गोपीचन्द भोगों में फँसे थे। जोगी जालन्धर नाथ उन्हें लेकर चले गए। कृष्ण को लेकर अक्रूर अदृश्य हो गया।

जब इन्द्र ने छल करके कर्ण की परीक्षा ली तो वह उसका कवच मांग कर ले गया। उस कवच से अर्जुन को सुख मिला। नागमती का कथन है कि उसी प्रकार सुग्गा भी छल करके उसका अन्तरंग प्रियतम हर ले गया। जिससे उसे दुःख मिला और उसकी वैरिनि पद्मावती को आनंद पहुँचा। हानि-लाभ की दृष्टि से बलि, कर्ण, गोपीचंद, कृष्ण, इन चार प्रकार के दृष्टान्तों में से प्रत्येक का दो अर्धालियों में वर्णन जायसी की पुर प्रस्तुत शैली है।

आगे, सारस की जोड़ी में से एक को वह क्यों हर ले गया। हरना ही था तो रखने को मर क्यों नहीं गया। विरह की ऐसी आग नागमती को लगी है कि वह झुलस कर हड्डी ~~हो~~ हो गयी है।

342 →

पिउ वियोग अंस बाउर जीउ। - - - - - - -
हंस जो रहा सरीर महँ पाँख जरे तन थाक ॥

व्याख्या → प्रिय के वियोग में उसका जी बावला सा हो गया। वह पपीहे की तरह 'पिउ पिउ' रटने लगी। काम उस स्त्री को अधिक अधिक सताने लगा। वह सुग्गा प्रियतम की नाम से उसका प्राण ही हर ले गया। उसे ऐसा विरह का बाण लगा कि हिल डुल भी न सकती थी। रक्त के पसीजने से शरीर की चोली भीग गई। सखी ने मन में विचार कर देखा कि मदन की सताई हुई यह बाला अब हार गई है और काँप - काँपकर प्राण छोड़ देना चाहती है। पहले क्षण में श्वास पेट में आता था और दूसरे क्षण निकल जाता था जिससे वे सब निराश हो जाती थी। सखियाँ हवा करती और चोले को जल से सींचती थी। पहर भर में वह बाला होश में आकर मुँह से बोली। प्राण जाना चाहता है। इसे कौन रखेगा? कौन चातक की भाषा से मिलाएगा?

उसके मुँह से विरह की आह निकली। उस हाँक से अग्नि उत्पन्न हुई। शरीर में जो हंस या जीव था उसके पंख जल गए। अतएव वह उड़ न सका और शरीर में ही रह गया।